डायरी का एक पन्ना

1. कलकत्ता वासियों के लिए 26 जनवरी 1931 का दिन क्यों महत्वपूर्ण था?

उत्तरः– कल्कत्ता वासियों के लिए 26 जनवरी 1931 का दिन इसलिए महत्वपूर्ण था क्योंकि इस दिन कांग्रेसियों के द्वारा आजादी मिलने से पहले ही आजादी का समारोह मनाया जा रहा था।

2. सुभाष बाबू के जुलूस का भार किस पर था?

उत्तरः– सुभाष बाबू के जुलूस का भार पूर्णोदास पर था।

3. विद्यार्थी संघ के मंत्री अविनाश बाबू के झंडा गाडने पर क्या प्रतिक्रिया हुई?

उत्तरः– विद्यार्थी संघ के मंत्री अविनाश बाबू ने जब श्रद्धानंद पार्क में झंडा गाडा। तब पुलिस ने उन्हें पकड लिया। और उनके साथ आऐ हुए लोगों को मार–पीट कर भगा दिया।

4. लोग अपने–अपने मकानों व सार्वजनिक स्थलों पर राष्ट्रीय झंडा फहराकर किस बात का संकेत देना चाहते थे?

उत्तरः– लोग अपने–अपने घरों और सार्वजनिक स्थलों पर झंडा फहराकर यह संकेत देना चाहते थे कि अब वे अंग्रेजो के गुलाम नहीं है। और उनके बनाए हुए किसी कानून को नहीं मानेगें।

5. पुलिस ने बडे–बडे पार्को तााि मैदानी को क्यों घेर लिया था?

उत्तरः– पुलिस बडे–बडे मैदानों और पार्को को घेरकर भारत वासियों को स्वतंत्रता समारोह मनाने से रोकना, चाहती थी।

25–50 शब्दों में उत्तरः–

1. 26 जनवरी 1931 के दिन को अमर बनाने के लिए क्या क्या तैयारियॉ की गई?

उत्तरः– 26 जनवरी 1931 दिन को अमर बनाने के लिए कलकत्ता वासियों ने बहुत सी तैयारियॉ की थी। जैसे केवल प्रचार में ही 2000 रूप्ये खर्च किए गए। कार्यकर्ता घर–घर जाकर लोगों को स्वतंत्रता का महत्व समझा रहे थे। अधिकतर मकानों और सार्वजनिक स्थलों पर राष्ट्रीय झंडा फहराया गया था। ओर जगह–जगह जुलूस निकाले जा रहे थे।

2. 'आज जो बात थी वह निराली थी' किस बात से पता चल रहा था कि आज का दिन अपने आप से निराला है स्पष्ट कीजिए।

उत्तरः– 26 जनवरी 1931 के दिन कलकत्ता के लोगों में अपना स्वतंत्रता समारोह मनाने के लिए बहुत उत्साह था। पुलिस के मना करने के बाद भी हजारों की संख्या में लोग मोनूमेंढ के मैंदान में इकट्ठा हो गए। लगता था, उन्हें पुलिस का कोई डर नहीं है, इसलिए लेखक ने लिखा है कि आज जो बात थी वह निराली थी।

3. पुलिस कमिश्नर के नोटिस और कौसिल के नोटिस में क्या अंतर था?

उत्तरः– पुलिस कमिश्नर का नोटिस निकल चुका था कि अमुक–अमुक धारा के अनुसार कोई सभा. नहीं हो सकती। जो लोग काम करने वाले थे उन सबाकें इंसपेक्टरों के द्वारा नोटिस और सूचना दे दी गई थी कि आप यदि सभा में भाग लें में तो दोषी समझे जॉऐंगें। इधर कौंसिल की तरफ से नोटिस निकल गया था कि मोनुमेंट के नीचे ठीक चार बजकर चौबीस मिनट पर झंडा फहराया जाएगा। तथा स्वतंत्रता की प्रतिज्ञा पढी जाएगी। सर्वसाधारण की उपस्थित होनी चाहिए। खुला चैंलेज देकर ऐसी सभा पहले नही की गई थी।

4. धर्म तव्ले के मोड पर आकर जुलूस टूट गया?

उत्तरः– मोनूमेंट पर झंडा फहराने के बाद स्त्रियों ने प्रतिक्षा पढी और फिर वे आगे बढने लगी। उनके साथ अब बहुत सी भीड इकट्ठी हो गई। यह देखकर पुलिस ने उन पर फिर से

लाठियॉ चलानी शुरू कर दी। पुलिस की मार से डरकर भीड़ बिखर गई ओर धर्मतल्ले तक पहुॅचते–पहुॅचते जुलूस टूट गया।

5. **डॉ. दासगुप्ता जुलूस में घायल लोगों की देख रेख तो कर ही रहे थे, उनके फोटो भी उतरवा रहे थे। उन लोगों के फोटो खीचने की क्या बजह हो सकती थी। स्पष्ट कीजिए।**

उत्तरः– डॉ. दासगुप्ता जुलूस में घायल व्यक्यिों का इलाज तो करवा ही रहे थे। उनके फोटो भी खिंचवा रहे थे। वे इन फोटों को देष के कोने–कोने में भेजकर लोगो ंको यह दिखाना चाहते थे, कि अंग्रेजी सरकार हम भारतीय लोगों पर कितना अत्याचार कर रही है। और कलकत्ता के लोगों ने उनके अत्याचारों का सामना कितने साहस ओर उत्साह के साथ किया।

50–60 शब्दों में उत्तरः–

1. सुभाष बाबू के जुलूस में स्त्री समाज की कया भूमिका थी?

उत्तरः– सुभाष बाबू के जुलूस में स्त्री समाज की अहम भमिका थी। कलकत्ता के प्रतयेक भाग से स्त्रियों ने अपने–अपने जुलूस निकाले और फिर वे सुभाष बाबू के जुलूस में जाकर मिल गई चौरंगी चौराहे के पास जब सुभाष बाबू के जुलूस को रोक लिया गया, पुलिस ने उन पर लाठी चार्ज की। किसी भी पुरूष को आगे बढने नही दिया तब स्त्रियों ने आगे बढकर मोनूमेंट पर झण्डा फहराया और प्रतिज्ञा पढ़ दी। यह देखकर पुलिस ने उन पर भी लाठियॉ चालानी शुरू कर दी, किनतु स्त्रियॉ अपने स्थान से नहीं हटी उनके साथ जो बॉलेटियर गए थे सभी के हाथें में झंडे थे, और वे लाठी खाने के बाद भी अपनी जगह पर डटे रहे। अपना काम पूरा करके ही वे सब वहॉ से हटे।

2. जब से कानून भंग का काम शुरू हुआ है तब से बाज तक इतनी बडी सभा ऐसे मेदान में नहीं की गई थी ओर यह सभा तो कहना चाहिए कि ओपन लडाई थी। यहॉ पर कौन से और किसके द्वारा लागू किए गए कानून को भंग करने की बात कही गई है? क्या कानून भंग करना उचित था पाठ के संदर्भ में अपने विचार प्रकट कीजिए।

उत्तरः– देश को अंग्रेजो से मुक्ति दिलाने के लिए गांधी जी ने सत्याग्रह आंदोलन छेडा था। इस आंदोलन ने जनता में आजादी की भावना को जगा दिया। देष के कोने कोने से ऐषे लाखों लोग सामने आए जो देष के लिए अपना सब–कुछ लुटाने को तेयार थे। इसके साथ ही गांधी ने सावज्ञा आंदोलन भी चालू कर दिया जिसके तहत यह निश्चय किया गया कि अब हम अंग्रेजो के बनाए हुए, किसी भी कानून का पालन नहीं करेंगे। 26 जनवारी 1931 के दिन जब कॉग्रेसियों ने कलकत्ता में अपना स्वतंत्रता दिवस मनाना चाहा तब अंग्रेजो ने एक नोटिस निकालकर इस पर प्रतिबंध लगाया, किंतु कल्कत्ता वासियों ने उनके किसी कानून को नहीं माना और पूरे उत्साह के साथ अपना उत्सव मनाया। हमारे विचार से कानून भंग करना आवश्यक था। यदि ऐसा नहीं किया जाता तो अंग्रेजों के अत्याचार दिन–पर–दिन बढते जाते और भारत कभी भी आजाद नहीं हो पाता।

3. **बहुत से लोग घायल हुए, बहुतों को लॉकअप में रखा गया, बहुत–सी स्त्रियॉ जेल गई फिर भी इस दिन को अपूर्व बताया गया है। आपके विचार में यह सब अपूर्व क्यों है? अपने शब्दों में लिखिए।**

उत्तरः– बहुत से लोग घायल हुए, बहुत सी स्त्रियों को जेल भी जाना पडा, फिर भी लेखक ने इस दिन को कलकत्ता में अपूर्व माना है। क्योकि इससे पहले कलकत्ता में अपूर्व माना है। क्योंकि इससे पहले कलकत्ता में कभी भी इतनी बडी सभा नही हुई थी। और स्त्रियों ने भी इतन बडी संख्या में कभी किसी समारोह में भाग नहीं लिया था, और वे जेल भी नहीं गई थी। कलकतता के नाम पर एक कलंक था कि वहॉ पर स्वतंत्रता के लिए कोई भी काम नहीं हो रहा किंतु इस समारोह के बाद वह कलंक पुरी तरह धुल गया ओर लोगों को विश्वास हो गया कि कलकत्ता में भी आजादी के लिए भी बहुत काम हो सकता है, इसलिए लेखक ने इस दिन को अपूर्व माना है।